Topic बी० ए० प्रथम वर्ष - Date

नीतिशतकम्

- आचार्य भर्तृहरि

परीक्षोपयोगी श्लोक एवं उनकी व्याख्या

1. अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति ॥

सन्दर्भ प्रस्तुत श्लोक आचार्य भर्तृहरि प्रणीत 'नीतिशतकम्' पुस्तक से लिया गया है।

प्रसंग उक्त श्लोक में अल्पज्ञानी मनुष्य के स्वभाव को इंगित करते हुए उसे किसी भी प्रकार से समझाना अत्यन्त दुष्कर बताया गया है।

व्याख्या इस श्लोक में आचार्य भर्तृहरि तीन प्रकार के मनुष्य का उल्लेख करते हैं — प्रथम वो जो बिलकुल मूर्ख हैं, दूसरे जो विशिष्ट ज्ञान रखते हैं और तीसरे जो अल्पज्ञानी अर्थात् इधर उधर से अधूरा ज्ञान प्राप्त कर स्वयं को सर्वज्ञ विद्वान मानने लगते हैं। कवि का कथन है कि नितान्त मूर्ख व्यक्ति को आसानी से समझाया जा सकता है, विशिष्ट ज्ञान युक्त व्यक्तियों और भी अधिक आसानी से समझाया जा सकता है परन्तु अल्पज्ञानी व्यक्ति जो स्वयं को सर्वज्ञ तथा सम्पूर्ण शास्त्र का ज्ञाता समझता है उसे कोई मनुष्य तो क्या स्वयं चतुर्मुख ब्रह्माजी भी नहीं समझा सकते क्योंकि वे अल्पज्ञान के अहंकार में यह समझते हैं कि उन्हें किसी के नैतिक उपदेश की आवश्यकता ही नहीं है।

टिप्पणी प्रस्तुत श्लोक आर्याजाति छन्द में है।

Scanned by CamScanner

Topic नीतिशतकम् Date

२. लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्,
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमास्वादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्त माराधयेत्॥

प्रसंग अत्यन्त दुर्लभ वस्तु को भी प्राप्त किया जा सकता है, पर दुराग्राही मूर्खजन के चित्त को वश में नहीं किया जा सकता, इसी बात को कवि ने प्रस्तुत श्लोक में बतलाया है-

व्याख्या कदाचित् कोई व्यक्ति भले ही प्रयत्नपूर्वक पीसता हुआ बालू के कणों में से तेल प्राप्त कर ले, प्यास से पीड़ित व्यक्ति भी कदाचित् मृगमरीचिकाओं में जल का पान कर ले तथा कदाचित् कोई व्यक्ति यत्र तत्र वन प्रदेश में घूमता हुआ खरगोश का सींग भी प्राप्त कर ले परन्तु दुराग्रही मूर्खजन के चित्त को कोई भी वश में नही कर सकता इस्त श्लोक में कवि का अभिप्राय है कि यद्यपि बालू से तेल निकालना, मरुमरीचिकाओं से प्यास बुझाना तथा खरगोश के सींग प्राप्त करना सर्वथा असम्भव है, तथापि अत्यधिक प्रयत्न करते करते मनुष्य को इनकी प्राप्ति में सफलता मिल जाए परन्तु दुराग्रही मूर्ख व्यक्ति को वश में करना सर्वथा असम्भव ही है। तात्पर्य है कि मूर्ख व्यक्ति को येन केन प्रकारेण समझाया नहीं जा सकता।

टिप्पणी प्रस्तुत श्लोक में अतिशयोक्ति अलंकार है।
पृथिवी नामक छन्द है।

- डा० ऋतु शुक्ला
असि० प्रो० (संस्कृत)
राज० महा० तिलहर, शाहजहाँपुर

Scanned by CamScanner